(6.) समवाय

वैशेषिक दर्शन में सम्बंधों को बाह्यार्थ माना गया है। इन्हें सामान्यतः गुणों के अन्दर शामिल किया जाता है, लेकिन एक सम्बंध ऐसा है जिसे एक स्वतंत्र पदार्थ मान लिया गया है। केवल समवाय को ही आंतिक या आत्मीय सम्बंध कहा जा सकता है, क्योंकि इसके द्वारा सम्बन्धित वस्तुओं के पृथक होने का मतलब अनिवार्यतः उनमें से कम-से-कम एक का नष्ट हो जाना है। प्रशस्तवाद ने समवाय को उस सम्बंध के रूप में परिभाषित किया है जिसमें हम अलग की जा सकने वाली वस्तुओं के बीच सम्बंध स्थापित करते हैं, तथा इसे हम निम्न कथन का आधार मान सकते हैं, यह उसमें है। समवाय द्वारा सम्बन्धित वस्तुयें अयुतसिद्ध हैं। यह अपरिहार्य और अनिवार्य सम्बंध है। अयुतसिद्ध वस्तुओं के पांच प्रकार है और केवल इन्हीं में समवाय सम्बंध होता है। ये हैं— 1. द्रव्य और गुण 2. द्रव्य और कर्म, 3. व्यक्ति और सामान्य, 4. नित्य वस्तु और विशेष, 5. अवयवी और अवयव।

संयोग के विपरीत समवाय नित्य सम्बंध है। यह दो पदार्थों का वह सम्बंध है जिसके कारण एक दूसरे में समवेत रहता है। अवयवी अपने अंशों में गुण या कर्म — द्रव्यों में, सामान्य व्यक्तियों में, तथा विशेष नित्य निरवयव द्रव्य में रहते हैं। इस प्रकार धागों में कपड़ा, गुलाब के फूल में लाल रंग, बहते हुये पानी में गति, भिन्न-भिन्न स्त्री पुरुषों में सामान्य धर्म, "मनुष्यत्व" और एक परमाणु में उसका अपना धर्म "विशेष" समवेत है। विचारकों का मत है कि समवाय-पदार्थ ~~को मान~~ की जरूरत इस दर्शन के बहुवादी अभ्युपगम से पैदा हुयी है, जो अलग पहचाने जा सकते, को "भिन्न" होने के बराबर मानता है। संयोग से उसके सम्बंध को स्पष्ट करते हुये हम कह सकते है कि संयोग केवल द्रव्यों के मध्य होता है जबकि समवाय द्रव्यों के मध्य भी हो सकता है। और नहीं भी हो

Scanned with CamScanner